Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

कृषक श्रमिको का समाजशास्त्रीय अध्ययन
(रीवा जिले में जवा ब्लॉक के अंतर्गत ग्राम जनकहाई के संदर्भ में)

डॉ. शाहेदा सिद्दीकी
प्राध्यापक,समाजसाास्त्र,
शास. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी) महाविद्यालय रीवा (म0प्र0)

सीमा पटेल
शोधार्थी, समाजशास्त्र,
शास. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी) महाविद्यालय रीवा (म0प्र0)

Article Info
Volume 7, Issue 1
Page Number : 39-47

Publication Issue :
January-February-2024

Article History
Accepted : 25 Jan 2024
Published : 15 Feb 2024

सारांश :– भारत एक विकासशील एवं कृषि प्रधान राष्ट्र है। जहाँ पर कुल आबादी का लगभग 75 प्रतिशत भाग कृषि कार्यों पर आश्रित है। आज विश्व में प्रत्येक राष्ट्र विकास के चरम स्तर को प्राप्त करना चाहता है। इसके लिये विकासशील राष्ट्रों के सभी क्षेत्रों में चहुमुखी उन्नति की लक्ष्य सामने रखकर विकाश के सोपानों को स्पर्श करने का प्रयास किया जा रहा है। भारत कृषि मानसून की कृपा पर ही निर्भर है कभी अधिक वर्षा, कभी कम, वर्षा ओले तो कभी सूखा इत्यादि परिस्थितियों के कारण भारतीय कृषि निरन्तर प्रभावित रहती है। इसी वजह से कृषि उत्पादन में कमी हुई इसके कारण हमारे राष्ट्र के अधिकांश नागरिक गरीब एवं कमजोर है। इसी कारण से देश में आतंक, लूट, हत्या, चोरी, डकैती, विवाद इत्यादि वारदात होती है।

मुख्य शब्द : कृषक श्रमिक, सामाजिक स्थिति, कृषि, भारतीय अर्थव्यवस्था।

प्रस्तावना :– भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि केवल जीविकोपार्जन का साधन नही अपितु देश की सभी गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु है। यह भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इसका महत्व इसलिये अधिक है क्योंकि यह राष्ट्रीय आय का मुख्य स्त्रोत है। राष्ट्रीय आय में 50 प्रतिशत कृषि का भाग है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

80 प्रतिशत रोजगार प्राप्त करने का साधन है। अनेक उद्योग–धन्धों का मूलाधार है। देश की सौ करोड़ आबादी के लिये खाद्यान्नों की पूर्ति का साधन है। प्रति वर्ष 400 करोड़ रूपये की आमदनी भू–राजस्व एवं कृषि आयकर के रूप में प्राप्त होती है।

विदेशी व्यापार–आयात में महत्वपूर्ण घटक है। पशुपालन व्यवसाय में कृषि का अपूर्ण योगदान होता है, सरकार के बजट पर महत्वपूर्ण प्रभावशाली, राजनैतिक स्थिरिता और आर्थिक विकास में सहयोग देता है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में देश को महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में सहायक है।

कृषि आत्म निर्भरता कि ऐसी स्थिति है, जिसमें कोई देश अपने निवासियों के लिये पर्याप्त खाद्यान्न का उत्पादन करने में पूर्णतः सक्षम हो। स्वदेशी कृषि उद्योगों के लिये कच्चा माल अन्य किसी देश से न आयात किया जाये। कृषि अधिकांश लोगों की जीविका का साधन है। फिर भी भारत में यह परम्परागत और पिछड़ी स्थिति में है, जिसे अब मशीनीकृत के माध्यम से उन्नत बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

भारत में कृषि के पिछड़ेपन के अनेक कारण हैं, जो कृषि की वर्षा पर निर्भर रहता है, तथा सिंचाई के पर्याप्त साधन का नहीं होना है, क्योंकि आधुनिक खाद्य बीज, उपकरणों आदि के उपयोग का अभाव होता है, कृषकों की ऋण ग्रस्तता और पर्याप्त कृषि साख का उपलब्ध न होना तथा अविकसित कृषि–भूमि कृषि के लिये भू–स्वामित्व एवं भू–धारण नियम विधान की कमियाँ कृषि एवं ग्रामीण–विकास हेतु पंचवर्षीय योजनाओं का लाभ पूरी तरह कृषकों तक न पहुँच पाना है। लाभकारी एवं व्यावसायिक वस्तुओं का कम उत्पादन विद्युत आपूर्ति की कमी कृषि उपज से संबंधित उद्योगों का अल्प–विकसित होना ये सब कृषि समस्या का कारण है। कृषि उपज से सम्बन्धित उद्योगों का अल्प–विकसित होना तथा कृषि उपज विपणन में बाधायें जहाँ किसान मण्डी में अपनी उपज बेचने जाते हैं वहाँ उचित ढ़ंग से मूल्य निर्धारण न होने से भी किसानों का नुकसान होता है।

थामस के अनुसार "श्रम से शरीरिक व मस्तिष्क के उन समस्त मानवीय प्रयासों का बोध है, जो कि परिश्रम पाने की आशा से किये जाये।"

इस प्रकार श्रमिक मानवीय प्रयासों से संबंधित है, ये प्रयास शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के हो सकते हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य शारीरिक या मानसिक लाभ प्राप्त करना होता है। यह लाभ शारीरिक मानसिक लाभ अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष पूर्णतः या शाब्दिक किसी भी रूप में हो सकता है।

अध्ययन की अवधारणा :–

मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी है और उसे कुछ न कुछ जानने की इच्छा और जिज्ञासा बनी रहती है। इसी जिज्ञासु के कारण वह कुछ न कुछ सोचने विचारने और खोजने में अपना समय लगाता रहता है। चूँकि मेरा उद्देश्य कृषक श्रमिकों का समाज शास्त्रीय अध्ययन है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया है कि रीवा जिलें के जनकहाई गाँव के कृषक श्रमिकों के आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है।

शोध के उद्देश्य :–

1. कृषक श्रमिकों की परिवारिक स्थिति को जानना।
2. कृषक श्रमिकों की वैवाहिक स्थिति की जानकारी प्राप्त करना।
3. कृषक श्रमिकों के रहन–सहन एवं आवासीय व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
4. कृषक श्रमिकों के आर्थिक राजनैतिक, व्यवहारिक एवं सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना।

शोध के परिकल्पनाएँ –

1. कृषि श्रमिकों की वैवाहिक स्थिति अपेक्षानुसार सामान्य जीवन–यापन कर रहे हैं।
2. कृषि श्रमिकों के रहन–सहन एवं आवासीय व्यवस्था अच्छी है।
3. कृषि श्रमिकों के सामाजिक समस्याओं में आर्थिक राजनैतिक, व्यवहारिक एवं सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
4. कृषि श्रमिकों के पारिवारिक एवं व्यवहारिक जीवन का स्तर अच्छा है।
5. कृषि श्रमिकों के आर्थिक जीवन में कृषि से संबंधित उद्योग एवं अन्य उद्योगों को मिलजुल कर पूरा करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

किसी भी समस्या का विस्तृत अध्ययन करने के लिये किसी न किसी क्षेत्र या सीमा में बंधकर अध्ययन किया जा सकता है। अध्ययन करते समय बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। फिर भी अध्ययनकर्ता इन सारी कठिनाइयों की परवाह न करते हुये अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में तत्पर रहता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिये वह एक क्षेत्र का चुनाव करता है, जिसमें उस क्षेंत्र के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके।

प्रस्तुत अध्ययन के लिये मैंने रीवा जिले के अन्तर्गत ग्राम जनकहाई विकासखण्ड जवा को चुना है।

पूर्व में किए गए कार्यों की संक्षिप्त समीक्षा

ब्रिजेन्द्र पाल सिंह (2000) भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि है। इसके विकास से अर्थव्यवस्था में दृढ़ता आती है। राष्ट्रीय आय में इसका योगदान 34 प्रतिशत के आसपास है। गत वर्षो में खाद्यान तथा व्यावसायिक फसलों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कृषि उत्पादन को प्रभावित करने वाले तत्वों में प्राकृतिक और आर्थिक दोनो महत्वपूर्ण है। विगत दो–तीन दशकों में भारत में द्वितीयक क्षेत्र एवं तृतीयक क्षेत्र को तीव्र गति से विस्तार हुआ है प्रभावी देश की कार्यशील जनसंख्या का 52 प्रतिशत प्राथमिक क्षेत्र पर आश्रित है। देश में कृषि 115.5 मिलियन कृषक परिवारों की आजीविका का माध्यम है। यहाँ तक कि सकल राष्ट्रीय उत्पाद का लगभग 15 प्रतिशत भाग कृषि व उसकी सहायक क्रियाओं से प्राप्त होता है। भारत में अनेक महत्वपूर्ण उद्योग प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर देश की 1.21 अरब से अधिक जनसंख्या के खाद्यान व खाद्य पदार्थो की आपूर्ति कृषि क्षेत्र से ही की जाती है। करोड़ों पशुओं को प्रतिदिन चारा कृषि क्षेत्र से ही प्राप्त होता है।

डॉ. आर.के. भारतीय (2006) भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर लघु तथा सीमांत कृषकों खेतिहर मजदूरों तथा अन्य श्रमिकों, शिल्पियों, व्यवसायिक एवं सेवा करने वाले परिवारों का ही बाहुल्य है। परन्तु आज भी इनमें से अधिकांश परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं! अतः यह कहा जा सकता है कि भारत का समाजिक एवं आर्थिक विकास ग्रामीण क्षेत्रों के बुनियादी विकास पर ही आधारित है। ग्रामीण विकास की अनेकोनेक समस्याएं जिनमें प्रमुख रूप से आर्थिक अधोसंरचना, कृषि, लघु एवं कुटीर उद्योग व समान्वित विकास की समस्याएं है!

फैरिंगटन और जेम्स (2000) द्वारा किये गये एक सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि विविधीकरण अक्सर अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में आजीविका का प्रमुख विशेषताओं में से कुछ जोखिम को कम करने के साथ जुड़ा है। भारत में गरीब किसान अपनी आजीविका कमाने के लिए विविध तरीकों पर चर्चा करते हैं कि कैसे वाटर शेड विकास परियोजनाओं अल्पकालिक रोजगार, वानिकी, चारागाह विकास, पशुधन विकास और सूक्ष्म उद्यम विकास के माध्यम से विविधीकरण समर्थन करते है।

एस.महेन्द्र देव (2012) कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था में एक निर्णायक भूमिका निभाता है अपने योगदान सकल हालांकि घरेलू उत्पाद (जीडीपी) भारतीयों को 56 प्रतिशत रोजगार प्रदान करता है। ग्रामीणों में कृषि के विकास से इस क्षेत्र में आय की वृद्धि हुई है। कुछ वाणिज्यिक फसलों का विकास कृषि जिंसों के निर्यात को बढ़ावा देने और कृषि आधारित उद्योगों के तेजी से विकास लाने की महत्वपूर्ण क्षमता है। इस प्रकार कृषि अर्थव्यवस्था के समग्र विकास के लिये योगदान देता है।

अध्ययन विधि :–

कोई भी सर्वेक्षण तभी सफल हो पाता है, जब उस कार्य को करने का तरीका वैज्ञानिक हो, "कृषक श्रमिकों की समाजशास्त्रीय अध्ययन" (रीवा जिलें के ग्राम पंचायत जनकहाई पर आधारित) इस अध्ययन के लिये मुझे भी वैज्ञानिक तरीका अपनाना होगा।

अध्ययन के लिये ग्राम जनकहाई क्षेत्र को चुना है। अध्ययन के लिये 50 परिवारों का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि वे परिवार एक स्तर या एक विचार के न हो। साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से पूछे गये प्रश्नों के विश्लेषण पर शोध पत्र आधारित है।

पारिवारिक जीवन :–

कृषक श्रमिकों की पारिवारिक एवं व्यवहारिक जीवन का अध्ययन में तालिका के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

अध्ययन में सबसे प्रथम जनकहाई गाँव की कुल आबादी इस प्रकार से है :–

तालिका क्र. 1

वर्गवार विभाजन

क्र.	विवरण	वर्गवार	निदर्शन	प्रतिशत
1.	उच्च वर्ग	3,000	16	32 %
2.	मध्यम वर्ग	1,000	17	34 %
3.	निम्न वर्ग	1,000	17	34 %
योग		**5,000**	**50**	**100 %**

उपर्युक्त तालिका के आधार पर जनकहाई गाँव की कुल जनसंख्या 5,000 हजार है, जिसमें सामान्य वर्ग की जनसंख्या सबसे ज्यादा 3,000 हजार है, मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग की 1,000 एक–एक हजार है, जिसमें निदर्शन के रूप में कुछ व्यक्तियों का अध्ययन किया गया है, जिसमें सभी वर्गों में से 50 का अध्ययन शामिल है।

कृषक श्रमिकों की पारिवारिक स्थिति तालिका के आधार पर इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है।

तालिका क्र. 2

पारिवारिक विवरण

क्र.	विवरण	उच्च वर्ग	मध्यम वर्ग	निम्न वर्ग	संख्या	प्रतिशत
1.	संयुक्त परिवार	12	10	8	30	60 %
2.	एकल परिवार	7	7	6	20	40 %
योग		**19**	**17**	**14**	**50**	**100 %**

तालिका के आधार पर जनकहाई गाँव का परिवारों की स्थिति में संयुक्त परिवार उच्च वर्ग में ज्यादा पाये गये हैं, जिसका मुख्य कारण उनमें शिक्षा का पाया जाना है, मध्यम एवं निम्न वर्ग में क्रमशः कम संयुक्त परिवार 60 % है, जिसमें एकल परिवार क्रमशः एक–एक के अन्तर में है जिसमें 40 % गाँव में एकल परिवार पाये गये हैं। पारिवारिक जीवन में महिलाओं की स्थिति में जनकहाई गाँव के अध्ययन के दौरान इस प्रकार वर्गीकृत है :–

तालिका क्रमांक–3

महिलाओं की स्थिति

क्र.	विवरण	महिलाओं की स्थिति	प्रतिशत
1.	सामान्य परिवार	18	36 %
2.	मध्यम परिवार	18	36 %
3.	निम्न परिवार	14	28 %
योग		**50**	**100 %**

उपर्युक्त तालिका के आधार पर जनकहाई गाँव की सामान्य वर्ग में महिलाओं की आर्थिक स्थिति 36 प्रतिशत है तथा मध्यम वर्ग में भी समान है निम्न वर्ग परिवार 28 प्रतिशत सबसे कम है।

परिवारिक जीवन में शिक्षा का अभाव बहुत ज्यादा है जो शिक्षित नागरिक विकास में सहायक होते हैं, शिक्षित व्यक्ति बुराइयों से स्वयं दूर रहता है, शिक्षा का स्तर में तालिका द्वारा प्रदर्शित है :–

तालिका क्रमांक–4

पारिवारिक जीवन में शिक्षा का स्तर

क्र.	**विवरण**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1.	युवा वर्ग	20	40 %
2.	वयस्क वर्ग	17	35 %
3.	वृद्धि वर्ग	13	25 %
योग		**50**	**100 %**

उपर्युक्त तालिका के आधार पर युवा वर्ग में शिक्षा का स्तर 40 प्रतिशत है तथा वयस्क वर्ग मं 34 प्रतिशत और वृद्धि वर्ग में 25 प्रतिशत यानी सबसे कम वृद्धि वर्ग में शिक्षा का प्रचार–प्रसार कम होने के कारण अशिक्षा का अभाव पाया गया।

पारिवारिक जीवन में महिलाओं की स्थिति में जनकहाई गाँव की शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं की स्थिति तालिका के आधार पर–

तालिका क्रमांक – 5

महिलाओं में शिक्षा

क्र.	**विवरण**	**उच्च वर्ग**	**मध्यम वर्ग**	**निम्न वर्ग**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1.	शिक्षित महिलायें	14	9	7	30	60 %
2.	अशिक्षित महिलायें	6	7	7	20	40 %
योग		**20**	**16**	**14**	**50**	**100 %**

तालिका के आधार पर शिक्षित महिलाओं में उच्च वर्ग की महिलायें ज्यादा शिक्षित हैं, जबकि मध्यम एवं निम्न वर्ग कम पढ़ी लिखी महिलायें हैं। गाँव के आधार पर 60 प्रतिशत शिक्षित महिलाओं की स्थिति तथा अशिक्षित महिलाओं 40 प्रतिशत है। सर्वेक्षण के आधार पर पाया गया कि सामान्य वर्ग की महिलाओं में शिक्षा का स्तर अधिक पाया गया है जबकि निम्न वर्ग में शिक्षा का स्तर कम है।

बालश्रम से सम्बन्धित कृषक श्रमिकों में जनकहाई गाँव के 14 वर्ष से कम उम्र के बालश्रम की सबसे ज्यादा अधिकता है, जिसका मुख्य कारण निर्धनता एवं अशिक्षा है, जो बालश्रम को निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

तालिका क्रमांक – 6

बालश्रम की स्थिति

क्र.	**विवरण**	**14 वर्ष से कम**	**प्रतिशत**
1.	सामान्य वर्ग	5	10 %
2.	मध्यम वर्ग	20	30 %
3.	निम्न वर्ग	25	60 %
योग		**50**	**100 %**

उपर्युक्त तालिका के आधार पर सामान्य वर्ग 10 प्रतिशत, मध्यम वर्ग 30 प्रतिशत तथा निम्न वर्ग 60 प्रतिशत है। सामान्यतः सामान्य वर्ग में बालश्रम आंशिक रूप से होता है, तथा मध्यम वर्ग में परिस्थितियों के कारण बालश्रम निर्भर होता है, जबकि निम्न वर्ग का समुदाय बाल्यकाल से आर्थिक समस्याओं से जूझता रहता जिसके कारण निम्न वर्ग में बालश्रम अधिक रूप में पाया जाता है।

सुझाव :–

कृषक श्रमिकों की समाज शास्त्रीय अध्ययन में सुझाव के तौर पर बिन्दुवार समझाने का प्रयास किया गया है :–

1. इन्हें सरकार द्वारा चलाये गये योजनाओं का ग्रामीण स्तर पर पहुँचाया जाय।
2. यहाँ के कृषक मजदूर प्रायः प्राकृति पर निर्भर है जिसके लिये विद्युत उपकरण, विद्युतीकरण एवं विद्युत आपूर्ति का साधन मुहैया कराया जाय।
3. सररकार को ग्रामीण स्तर पर कृषक मजदूर के समस्याओं का कैम्प लगाकर निवारण किया जाय।
4. कृषक मजदूरों को समय–समय पर कृषि के वैज्ञानिक तरीको का जानकारी दी जाय।
5. कृषक श्रमिकों को समय–समय पर उन्नति बीज खाद ग्रामीण स्तर पर उपलब्ध कराई जाय।
6. कृषक मजदूर प्राय अशिक्षित होते है, जिनको शिक्षा के माध्यम से मजबूत बनाया जाय।

7. कृषक श्रमिकों के पास आर्थिक समस्या बहुत आती है, इसलिये निशुल्क ऋण उपलब्ध कराई जाये।
8. कृषि के माध्यम से रोजगार का साधन उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाना चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डी.एस. बघेल–ग्रामीण समाज शास्त्र – पुष्पराज प्रकाशन रीवा, द्वितीय संस्करण 1981 (424+433)
2. रवीन्द्रनाथ मुखर्जी तथा कुल ब्रेस्ट, गिरीश चन्द्र, भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र 1962–प्रकाशन बुक डिपो बरेली।
3. राम आहूजा 2000, भारतीय समाज (रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली)
4. डी.डी. शर्मा, (भारतीय सामाजिक संस्थायें) साहित्य भवन आगरा प्रथम संस्करण 1980।
5. गोपाल कृष्ण अग्रवाल, 1971 (भारतीय समाज तथा संस्थायें) साहित्य भवन आगरा
6. डॉ के.पी. पोथन एवं 5 वी.सी.टोग्या, (परिवार और समाज द्वितीय संस्करण 1989) कमला प्रकाशन इन्दौर
7. समाज कल्याण मासिक पत्रिका नई दिल्ली,
8. योजना नई दिल्ली।